

श्रीः

श्रीतोताद्रिनाथ स्तोत्रम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमद् वरवर मुनये नमः

श्रीमद् वानमहाचल गुरुभ्यो नमः

॥ श्री तोताद्रिनाथ स्तोत्रम् ॥

| | |
|--|---|
| कमलाधरणीसुरलोकवधू विधिसूर्यचमूपतिशेषपते। विहगाधिपरोमशयोगिपते भृगुयोगिमृकण्डुसुताधिपते ॥ | १ |
| शटजित्कलिजित्गुरुजित्यतिराट् वरयोगिवरप्रदयोगिपते। शरणागतवत्सलसाधुपते परिपालय मां वियदद्रिपते ॥ | २ |
| बहुजन्मकृतैरपराधगणैः परिपूर्णजनावनदक्ष हरे। वरपङ्कसरोरुहपुष्करिणी तटवाससमुत्सुक पाहि सदा ॥ | ३ |
| शटवैरिगुरूत्तमदिव्यसुधा मयसूक्तिमुखैर्मुदितश्रवणात्। वियदद्रियतीन्द्रगुरुप्रथित स्तुतदेवपतेर्नपरं कलये ॥ | ४ |
| चिरजीविमृकण्डुसुताधिपते वरकोलसमुद्धृतभूमिपते। भृगुसेवितकृष्णारमाधिपते वरदो भव वाननगाधिपते ॥ | ५ |
| विनाव्योमशैलं न नाथो न नाथः सदा देवनाथं स्मरामि स्मरामि। रमानाथ नित्यं प्रसीद प्रसीद प्रियं भक्तपाल प्रयच्छ प्रयच्छ ॥ | ६ |
| कादारितदैत्यबकास्यभजे यमुकार्जुनमध्यगते नृहरे। ललनासुखलाभविनष्टवृष प्रथदैत्यकसप्त सुराधिपते ॥ | ७ |

श्रीमते रामानुजाय नमः

| | |
|---|----|
| पाञ्चजन्यधारिणे प्रयोगचक्रधारिणे भक्तवृन्दरक्षणैकभोग्यसद्गुणात्मने। शत्रुसङ्घ भञ्जनैकलीलया विराजते व्योमशैलनायकाय सन्ततम् नमोस्तुते ॥ | ८ |
| युष्मत्तैलाभिषेकात् शटरिपुजननं कारिराजः स्वपत्न्यां तस्मात्सर्वैः प्रपन्नैः अहरहरधुना तैलधाराभिषेकः। प्रेम्णानुष्ठीयते हो वियदगनगरे देवतासार्वभौम श्रीमत्तोताद्रिनाथाखिलजनहृदये मोदमार्धयस्व ॥ | ९ |
| यत्करोमि यद्दशनामि यद्वदामि ददामि यत्। यत्तपस्यामि तोताद्रे तत्करोमि त्वदर्पणं ॥ | १० |
| सर्वधर्मान् परित्यज्य त्वद्पादकमलं श्रये। त्वा मां प्रपन्नं तोताद्रे नन्दयाघविमोचनैः ॥ | ११ |
| पद्मया वसुदया शठारिणा भव्यरूपवरमङ्गयोज्वल। भट्टनाथसुतयाञ्चितप्रभो देवदेव कृपयैव पाहि मां ॥ | १२ |
| विजयीभव विजयीभव वियदद्रिपुरेस्मिन् विजयीभव विजयीभव वरमङ्गलधाम्नि। विजयीभव विजयीभव विजयप्रदमूर्ते विजयीभव विजयीभव शठवैरिशरण्य ॥ | १३ |
| स्वयम्बुक्तविख्याततोताद्रिदेशे वियत्पर्वते पाञ्चरात्रोपदेष्टा। वैखानसाराधितदिव्यमूर्तिः शठारिगीतैरिह भासि नित्यं ॥ | १४ |
| तोदाद्रिनाथ कमलारमणाहिभोगे वैकुण्ठनामविमानविराजमान्। श्रीगालवारव्यमुनिशापविमोचनेन भूम्यां प्रसिद्धशुभतीर्थतटे निवासिन् ॥ | १५ |
| तोदनात्सर्वपापानां तोताद्रिरिति गीयसे। तस्मात्वं सर्वपापेभ्यो मोक्षयासु वियद्विरे ॥ | १६ |

श्रीः

श्रीतोताद्रिनाथ स्तोत्रम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

उपचारापदेशेन कृतस्तोत्रलसत्कवौ।

विध्यमानापचाराम्श्च क्षमस्व गगनाचल ॥

१७

मङ्गलाशासनपरैः मदाचार्यपुरोगमैः।

सर्वैश्चपूर्वैराचार्यैः स्तुतदेवपतिम् भजे ॥

१८

शठकोपार्यविदुषा जगन्नाथार्यसूनुना।

स्तुता तोताद्रिनाथस्य स्तुतिर्मुक्तः सुगीयताम् ॥

॥ श्री तोताद्रिनाथ स्तोत्रं समाप्तं ॥